गुरु नानक – सबद २५
सालाही सालाहि एती सुरति न पाईआ ॥
जपु, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, ५

सालाही सालाहि एती सुरति न पाईआ ॥
नदीआ अतै वाह पवहि समुंदि न जाणीअहि ॥
समुंद साह सुलतान गिरहा सेती मालु धनु ॥
कीड़ी तुलि न होवनी जे तिसु मनहु न वीसरहि ॥२३॥

सार: सबसे क़ीमती गुण सच्चाई को अपने व्यावहारिक चरित्र का हिस्सा बनाना है। मनुष्य केवल आध्यात्मिक पेशवाओं के सकारात्मक गुणों को दोहराने और उनका जश्न मनाने में फँस जाता है और उनकी महान विचारधाराओं को क्रियान्वित करने के सार और महत्व को भूल जाता है।

सालाही सालाहि एती सुरति न पाईआ ॥
केवल बार-बार सुनाने या प्रशंसा करने से कोई सदगुणों को प्राप्त, समझ या उन्हें धारण नहीं कर सकता।

नदीआ अतै वाह पवहि समुंदि न जाणीअहि ॥
समुद्र में गिरने वाली नदियाँ उसकी विशालता से अनजान हैं।

समुंद साह सुलतान गिरहा सेती मालु धनु ॥
राजा-महाराजाओं की अपार संपत्ति

कीड़ी तुलि न होवनी जे तिसु मनहु न वीसरहि ॥२३॥
की क़ीमत तिल भर भी नहीं है, उन की तुलना में, जो सर्वव्यापी चेतना के आपसी संबंध को नहीं भूलते। (२३)

तत्त्व: गुरु नानक कहते हैं कि गुण, ताक़त, विनम्रता और धन, सर्वव्यापी चेतना के आपसी अंतर-संबंधित सार्वभौमिक सत्य को याद करने और उसका बयान करने में निहित हैं।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**
Oneness In Diversity Research Foundation
वेबसाइट: OnenessInDiversity.com
ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com